International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-09-2019; Accepted: 17-10-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 42-43

प्राचीन कालीन भारत में दलित वर्ग का ऐतिहासिक विष्लेषण

विकाष
पी.एच.डी. शोधार्थी, जीवाजी विष्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थी ने प्राचीन कालीन समाज में दलित वर्ग के स्थिति का ऐतिहासिक विष्लेषण करने का प्रयास किया है जिससे वर्तमान पीढ़ी को प्राचीन दलित वर्ग की स्थिति से परिचय कराया जा सके शोध पत्र में दलित समाज के प्रमुख परिवर्तनों का वर्णन किया गया है।

प्रथम ईसा के चार–पाँच हजार वर्ष पूर्व सुदूर उत्तर से किंही दैवीय आपदाओं के कारण एक बड़ा जाति समूह पहले ईरान आया और बाद में यहां से वह दो समूह में बंट गया जिनमें से एक समूह यूरोप की तरफ तथा दूसरा समूह अफगानिस्तान होकर वर्तमान पाकिस्तान और पंजाब क्षेत्र में आ गया।

"ईसा के हजारों वर्ष पूर्व भारत (पाकिस्तान सहित) में आर्यो का प्रवेष हुआ इस समय भारत के इस क्षेत्र को सिंधु घाटी की सभ्यता कहा जाता था। एवं बाहर से आने वाले स्वयं को आर्य कहते थे और जो लोग यहां के मूल निवासी थे उन्हें अनार्य/असुर/दस्यु/राक्षस आदि अपमान जनक नाम दिये" 1

कुछ समय बाद दोनों समूहो में संघर्ष होना प्रारम्भ हो गया और इस दौरान आर्य विजयी हुए जिन्होंने अनार्यो की मूल सभ्यता को नष्ट कर दिया।

इस समय कुछ अनार्य संघर्ष के कारण भारत के दक्षिण में चले गये जो बाद में आदिवासी अथवा जनजातीय लोग कहलाए। इन्होंने आर्यो की आधीनता स्वीकार्य नहीं की।

पराजित अनार्यो को गुलाम बनाये के उपरान्त आर्यो को अपनी पूर्व कालीन व्यवस्था को बदलने की आवष्यकता महसूस हुई।

ऋग्वेद की रचना के उत्तर काल से ही समाज में एक सबसे बड़ी बुराई जाति व्यवस्था आई जिसने समाज को कई वर्षो में बांट दिया।

ऋग्वेद के दसवे मण्डल पुरूष सूक्त में प्रथम बार यह उल्लेख हुआ कि ईष्वर ने आदि पुरूष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रीय, जांघों से वैष्य और चरणों से शूद्र को जन्म दिया।

इससे यह स्पष्ट होता है कि वर्ग अथवा जाति व्यवस्था का स्परूप ऋग्वेद के निर्माण के अंतिम समय में बनना प्रारम्भ हुई थी। पहले समाज में केवल दो समूह आर्य (द्विज) और अनार्थ (अद्विज) ही थे।

"उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था बहुत प्रभावी हो चुकी थी जिस कारण अथर्ववेद में राजन्य, वैष्य, शूद्र और आर्य का उल्लेख सामाजिक विभाग के रूप में मिलता है।'' 2

"ब्राह्मणों और राजन्यों ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कर लिया था और जन साधारण आर्य जो कृषि, पषुपालन अथवा अन्य व्यवस्थाओं में लगे हुये थे वो 'विषु' कहलाने लगे। तथा अनार्यो को शूद्र की श्रेणी में रख दिया गया। वैसे इस समय व्यवसाय के आधार पर आर्यो में विवाह सम्बन्ध एवं खान–पान में अधिक वन्धन देखने को नहीं मिलता है, लेकिन दस्यु, दास अथवा शूद्र जो आर्य नहीं माने गये थे उनमें अन्तर किया जाता था।'' 3

इस प्रकार समाज में धीरे–धीरे जाति प्रथा जटिल होती गयी और उनके बंधन कठोर हो गये। उसमें ऊँच–नीच तथा छुआ–छूत की भावना बढने लगी जिसके फलस्वरूप निम्न जाति के लोगों पर अत्याचार होने के कारण उनकी स्थिति शोचनीय हो गयी। शूद्रो को षिक्षा ग्रहण करने की अनुमति नहीं थी और न ही वह ईष्वर की आराधना कर सकता था अर्थात उसे वेद, मंत्र आदि बोलने एवं सुनने का अधिकार नहीं था और न ही उच्च जाति के लोगों के जल स्त्रोतों से पानी पीने का अधिकार था, यदि वह भूलवष इनमे से कोई कार्य कर भी लेता है तो उसे कठोर दण्ड दिया जाता था। इसके अलावा उसे गांव से दूर बाहर झोंपडी बनाकर रहना पड़ता था।

जब भारतीय समाज में बड़े–बड़े चिन्तक तथा समाज सुधारक उत्पन्न हुए तब शूद्रों की दयनीय दषा को देखकर उनका हृदय पिघल उठा। और उन्होंने प्रेरणा साहित्य लिखना प्रारम्भ किया। छटी शताब्दी ई.पू. (563 ई.पू.) में जन्में गौतम बुद्ध ने भी जाति प्रथा का विरोध किया और कहा संसार में सभी व्यक्ति समान हैं। अतः सभी को प्रेम पूर्वक रहना चाहिए।

इसी प्रकार जैन तीर्थंकरो ने जाति व्यवस्था का कड़ा विरोध किया है। प्राचीन कालीन मौर्य वंषीय शासक सम्राट अषोक मौर्य ने बौद्ध धर्म ग्रहण करके सीाी निसक्तजनों की सहायता की। इस समय समाज में वैवाहिक क्रियाएं अपने वर्ग के ही महिला पुरूष के साथ होती थी एवं स्त्रियां पुरूषों के साथ कार्य कर सकती थीं। मौर्य राजाओं ने सहिष्णुता की नीति अपनाई और अवसर मिलते ही बौद्ध धर्म को अपना लिया, क्योंकि बौद्ध धर्म उस समय का ऐसा धर्म था जो सभी वर्ग के व्यक्तियों को समानता की दृष्टि से देख रहा था। बौद्ध धर्म ने ऊँच–नीच, जाति व्यवस्था का विरोध खुले रूप में किया जिसके कारण अधिक से अधिक वर्ग के लोग बौद्ध धर्म अपनाने लगे।

यदि हम प्राचीन कालीन जाति व्यवस्था का वर्तमान परिपेक्ष्य में अध्ययन करते हैं तो यह निष्कर्ष निकल कर सामने आता है। कि समाज में व्याप्त प्राचीन जाति व्यवस्था के फल स्वरूप निम्न वर्ग के लोग एवं शोषित वर्ग के लोग जिन्होंने अन्य उच्च वर्गो के अत्याचार का सामना किया वह अपने आप को दलित कहने लगे क्योंकि दलित का आषय यह कदापि नहीं की वह नीच कुल का व्यक्ति है बल्कि दलित का आषय है दलन किया हुआ।

इसके तहत वह हर व्यक्ति आ जाता है जिसका शोषण, उत्पीड़न हुआ है।

सर्वप्रथम यह जानना आवष्यक हो जाता है कि दलित कौन है यह प्रष्न सबके मन मे उठता होगा कि दलित वर्ग किस प्रवृत्ति के लोग होंगे?

दलित शब्द किसी ने नही दिया यह नाम स्वयं रखा गया है। भारत के विभिन्न राज्यों में इनके नाम बहुत ही घटिया तथा घृणित होते थे इस लिए इन्होंने स्वयं को दलित कहना उचित समझा।

दलित नाम कोई ज्यादा पुराना नहीं है। गांधी ने जब इस वर्ग को हरिजन शब्द दिया जिसको अन्य वर्ग ने अपने तरीक से व्यक्त करना प्रारम्भ कर दिया इस लिए इस वर्ग के लोागें ने हरिजन शब्द का विरोध किया और स्वयं को दलित कहने लगे।

लगभग सन् 1960 ई. में दलित शब्द का प्रयोग होना शुरू हो गया और जब दलितों का प्रथम संगठन बना तो उनमें से एक खटीक जाति का मुसलमान भी था इस तरह छोटी जातियों से बने मुसलमान भी स्वयं को दलित कहलाने लगे। इसके अलावा ईसाई बने लोग भी अपने को दलित मानने लगे। दक्षिण भारत तमिलनाडू, कर्नाटक, केरला, आंध्रप्रदेष तथा महाराष्ट के कुछ भागों में भारत के सभी ईसाइयों की 70 प्रतिषत आबादी है, जिस प्रकार पंजाब में सिक्ख ज्यादा हैं उसी प्रकार दक्षिण भारत में ईसाई ज्यादा हैं। इनमे 95 प्रतिषत कथित नीची जातियों से बने ईसाई है इसलिए वह स्वयं को दलित कहलाते थे। इसी तरह अनुसूचित जाति में बने सिक्ख एवं सभी अनु. जातियां एवं अनुसूचित जनजाति स्वयं को दलित कहते हैं।'' 4

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से वर्तमान में कहलाने वाले दलित वर्ग के प्राचीन स्वरूप की व्याख्या एवं सामाजिक तथा ऐतिहासिक स्थिति को ध्यान में रखकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

प्राचीनकाल में दलित वर्ग के पास किसी प्रकार का आय का श्रोत नहीं था इसलिऐ इन्हें जीवन यापन के लिए दासता का कार्य करना पड़ा। इनकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण उच्चवर्ग ने इसका बहुत लाभ उठाया। तथा इनका कार्य करने का क्षेत्र निष्चित कर दिया।

पुरूष एवं महिला दोनों ही दिन भर काम किया करते तब जाकर उन्हें एक वक्त का भोजन की व्यवस्था कर पाते थे जबकि कभी–कभी इन्हें यातनाऐं नसीव होती थीं। फिर समाज में परिवर्तन आना प्रारम्भ हुआ और शुद्रो की स्थिति में सुधार आया।

"मौर्य कालीन आर्थिक स्थिति में देखा गया है कि शूद्रो के एक भाग को नए उपनिवेषो में जमीन दी गई और इन्होंने फसल काटने का कार्य भी किया। अधिकांष शूद्रो से जवरदस्ती बिना मजदूरी दिये काम भी लिया गया। यद्पि शूद्रों की आर्थिक स्थिति में सुधार भी देखने को मिलात है। लेकिन उनकी सामाजिक स्थिति नीची रहने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो गयी।'' 5

प्राचीन काल के इतिहास का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि ऋग्वैदिक लोगो का धर्म बहुत सरल था वह प्रकृति को अपना ईष्वर मानते थे और जल, वायु, अग्नि, इन्द्र आदि प्रमुख ईष्वर थे। शूद्र को ईष्वर की आराधना करने का स्वतंत्र अधिकार प्राप्त नही था वह मंदिर में प्रवेष नहीं कर सकता था और न ही वेद एवं मंत्र पढ़ सकता था और न ही उसे वेद मंत्र को सुनने की अनुमति थी। किन्तु बाद में जैन एवं बौद्ध धर्म आने के बाद इनकी धार्मिक जीवन शैली में परिवर्तन देखने को मिलता है।

"वौद्ध धर्म वैदिकता पर आधारित मात्र मानव द्वारा संचालित धर्म है इस धर्म में आत्मा परमात्मा, पाखण्ड और चमत्कार के लिए कोई स्थान नहीं है। इसके नैतिक नियमों में स्वतंत्रता, समता, भ्रातत्व की भावना का समावेष है बौद्ध काल में दलित वर्गो को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी थी जिसके फलस्वरूप वर्ग भेद एवं छुआ–छूत से पीड़ित लोग भी षिक्षा ग्रहण कर समाज में प्रसिद्ध हुए।''6

यहाँ यह बात स्पष्ट हो जाती है कि समाज में परिवर्तन आना स्वाभाविक प्रक्रिया है जब अन्य धर्म में कठोर नियम विषेष जाति के सन्दर्भ में बनाऐ गये तव हुए तभी समाज का रूबरू बौद्ध धर्म से हुआ।

यदि हम गुप्तोत्तर काल के बारे में बात करें तो इस समय शूद्रों के बंधुआ मजदूर होने के संकेत एक धार्मिक विचारधारा में मिलते हैं जो पूर्व मध्यकाल में आर्थिक प्रभावषाली हो गयी थी। यद्यपि उन्हें सरोवर, कूप, आहार–गृह आदि बनवाने की अनुमति प्राप्त थी लेकिन वह केवल गृहस्थ के रूप में ही काम कर सकते है और द्विजों की सेवा करके तथा संतानोत्पत्ति द्वारा ही पुण्य कमा सकते हैं।

प्राचीन कालीन समाज मे दलित स्त्रीओं की स्थिति की बात कि जाए तो इस समय आर्यो के आने के पूर्व सभी स्त्रीयों के समान अधिकार थे एवं किसी में ऊँच–नीच की भावना नहीं थी किन्तु आर्यो के आगमन के बाद वर्ण व्यवस्था ने दलित वर्ग को जंजीरों में जकड़ दिया जिससे दलित स्त्री एवं पुरूष दोनों की स्थिति शोचनीय होती गयी।

"प्राचीन भारतीय वास्तुकला में दलितो का योगदान

भारतीय समाज की यह बड़ी विडम्बना है कि जिस षिल्पकार ने अपनी कला के माध्यम से विष्व को आष्चर्य चकित कर दिया उसी को समाज में उपेक्षापूर्ण दृष्टि से देखा और उसे शूद्र वर्ग के अन्तर्गत रखा। वास्तुकला की अभिव्यक्ति होती है वैदिक काल में कला का विकास जिन षिल्पीओं द्वारा हुआ वह निम्न प्रकार हैं– कृषिवल (कृषक), कर्मार (लुहार), केवट (मछुआ), तक्षण, वृष्टा (बढ़ई), ध्मातृ (धातु गलाने बाले), वयत् (बुनकर), हिरण्यकार (स्वर्ण ढालने बाले सुनार), आदि।''7

बौद युग के दलित (षूद्रो) में षिल्पी सबसे निम्न था इस युग के पत्थर तोड़ने बालों को कुट्टक कहा गया है जिसने कलात्मक स्तम्भ आधार, दीवारे, भवन, मंदिर आदि बनाये।'' मौर्य कालीन साहित्य अर्थषास्त्र से ज्ञात होता है कि इस युग में उत्तम प्रकार के काष्ठ षिल्पी थे इसके साथ पत्थरों को काटकर अद्भुत आकृति देने में दलित षिल्पी निपुर्ण थे। पूर्व मध्ययुग के खजुराहों मंदिर, भुवनेष्वर, कोणार्क आदि मंदिरों की मूर्तियो में हमे षिल्पीओं की कुषलता देखने को मिलती है।

इस प्रकार दलित वर्ग के लोगों ने भारतीय सम्पदा को नया स्वरूप प्रदान करने में सहयोग दिया इस वर्ग के लोगो ने बंधुआ मजदूरी के रूप में कृषि कार्य करना प्रारम्भ किया और आगे चलकर वह स्वयं के लिए भी अनाज का उत्पादन करने लगा। जिससे उसकी आर्थिक दषा में सुधार हुआ। स्वयं की आवष्यकताओं की पूर्ति हेतु वह मजबूत बन गया।

मध्यकालीन समय में समाज सुधारक एवं साहित्यकारों के दिषा निर्देषन से इनकी स्थिति में सुधार आया अब वह स्वयं के अलावा राष्ट्र हित हेतु सामाजिक क्रियाओं में सहभागी बनने लगा।

प्राचीनकाल से संघर्षषील जीवनषैली होने के कारण दलित वर्ग आगे के प्रत्येक युग में संघर्ष करने के लिए तत्पर रहा और वह स्वयं अपना बजूद बनाने में सफल रहा वह अपनी नवीन पहचान बनाने एवं देष के लिए कुछ नवीन करने के लिए सपने बुनने लगा और उसके वह सपने आगे चलकर साकार भी हुऐ। दलित वर्ग में योग्य साहित्यकार, समाजसुधारक, वीर सैनिक, साहसी आन्दोलनकारी, देषप्रेमी, कलाकर, षिल्पी, चित्रकार, राजनेता वैज्ञानिक, खिलीड़ी तथा अभिनेता और विद्वान का उदय हुआ जिन्होंने भारत को नवीन दिषा प्रदान की। अर्थात प्राचीन काल से वर्तमान काल तक हमे अनेक व्यक्तित्व के लोग दलित वर्ग से प्राप्त हुऐ जिन्होंने देष हित में अपना कार्य किया।

संदर्भ सूची

1. माता प्रसाद – भारत में दलित जागरण और उसके अग्रदूत, सम्यक प्रकाषन, गौतम प्रिन्टर्स, नई दिल्ली 2010 पृ.–15
2. डॉ. राधेषरण, डॉ. सत्येन्द्र शरण – प्राचीन भारत का इतिहास, मध्यप्रदेष ग्रन्थ अकादमी, भोपाल – 2011 पृ.–82
3. डॉ. कैलाष खन्ना– प्राचीन भारत का इतिहास, भाग –1, अर्जुन पब्लिकेषन हाउस, नई दिल्ली, 2008 पृ.–51
4. अषोक दास – दलित दस्तक पत्रिका अंक–2, जुलाई 2015, नई दिल्ली पृ.–18
5. एल.पी.शर्मा – प्राचीन भारत का इतिहास, एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि. रामनगर, नई दिल्ली, पृ.–326
6. वी.डी. सावरकर – स्वतंत्रता संग्राम में अछूतो का योगदान गौतम, सेन्टर, लक्ष्मी प्रिन्टर्स, नई दिल्ली 2007 पृ.–25
7. ईष्वरी प्रसाद– प्राचीन भारतीय संस्कृति, पृ.–68